IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

कला शिक्षा में निहित सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण के अभिप्राय

सिकन्दर सुथार

सहायक आचार्य, चित्रकला

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान

सार – सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण आधुनिक शिक्षा शास्त्र का महत्वपूर्ण घटक है। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सामाजिक व भावनात्मक शिक्षा की महत्ता स्वीकार करते हुए इस पर योजनाबद्ध क्रियान्वयन किया जाना सुनिश्चित किया गया है। विकसित होते राष्ट्र के लिए समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया है और इस लक्ष्य की प्राप्ति में सामुदायिक सहभागिता अपरिहार्य है। ऐसे में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहयोग की भावना, सामूहिक क्रियाकलाप, सकारात्मक दृष्टिकोण इत्यादि गुण विकसित किए जा सकते हैं। कला शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।

कला मानव समाज का एक आनन्ददायी पक्ष है। मानव की विकास यात्रा में कला का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मूलतः कला मन की भावनाओं के संप्रेषण का उचित माध्यम है। मानव मन के उद्‌गार जैसे प्रेम, करुणा, सहानुभूति, रोमांच इत्यादि कलागत कुशलता से व्यक्त किए जाएं तो दूसरों पर इसका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह न केवल मन की संतुष्टि के लिए किया जाने वाला कार्य है बल्कि समाज के हित साधने में भी निरंतर कला का प्रश्रय लिया जाता रहा है। विद्यार्थी कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सही ढंग से अभिव्यक्त करना,दूसरे की भावनाओं को समझना इत्यादि सीखते हैं। कला शिक्षा के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियां विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचार करती हैं साथ ही अपने समुदाय के प्रति सहयोग की भावना प्रबल करती हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के फलस्वरूप एनसीईआरटी द्वारा कक्षा 3 से कक्षा 8 तक लागू की जाने वाली कला शिक्षा की पुस्तकों में दी गईं गतिविधियों के सुचारु ढंग से अपनाने पर सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण का लक्ष्य प्राप्त किया जा है।

कुंजी शब्द – कला, कौशल, पाठयक्रम, समूह सृजन, अभिव्यक्ति, सहयोग, समग्र शिक्षा।

सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा जिसे अंग्रेजी में Social And Emotional Learning कहा जाता है, शिक्षण की ऐसी विधि है जिसके अंतर्गत शिक्षार्थी को उसकी भावनाओं को जानने,प्रकट करने तथा उन भावनाओं पर साधिकार निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना सिखाया जाता है। साथ ही दूसरे लोगों की भावनाओं को समझने,स्वीकार करने और सहायता के लिए तत्पर रहना भी इसमें शामिल है। प्रचलित रूप में इस विधि को SEL नाम से जाना जाता है। यह आधुनिक शिक्षा शास्त्र का एक अभिन्न अंग है।

शिक्षा की परम्परागत प्रणालियों में रटने तथा स्मृति आधारित ज्ञान और बौद्धिकता को अधिक महत्व दिया जाता था जिससे कठोर शैक्षिक वातावरण बना जिससे सामान्य नागरिक शिक्षा से वंचित रह जाते या उन्हें अध्ययन बीच में छोड़ना पड़ता। शिक्षा की नवीन विधियों का प्रचलन बढ़ने से बुद्धि के साथ साथ मानवीय भावनाओं पर भी ध्यान केंद्रित किया जाने लगा। सामाजिक व

भावनात्मक शिक्षा शिक्षार्थी को इन्हीं भावनाओं को पहचानने और उनकी संतुलित अभिव्यक्ति के लिए प्रशिक्षित करती है। यह प्रणाली व्यक्ति विशेष की भावनाओं के साथ समुदाय की भावनाओं के संतुलन पर जोर देती है। जब कोई विद्यार्थी अपनी भावनाओं को सही ढंग से जानने और प्रकट करने की समझ विकसित करता है तब वह समाज की भावनाओं को भी आत्मसात करता है तथा सहयोग से कार्य करने की ओर तत्पर रहता है। सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण से आदर्श व खुशहाल जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से की जा सकती है।

यूनानी दार्शनिक प्लेटो के दर्शन में सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण का प्रारंभ माना जाता है। प्लेटो ने अपने ग्रन्थ रिपब्लिक में ऐसे शैक्षिक पाठयक्रम पर अपने विचार प्रकट किए हैं जिसमें मन,शरीर तथा आत्मा तीनों स्तर का संतुलन हो। जिसमें कला,साहित्य,खेल,विज्ञान,गणित सभी क्षेत्रों का समावेश किया जा सके। ऐसी शिक्षा नैतिक व आदर्श समाज का निर्माण करती है। आधुनिक शिक्षा की अवधारणा में 1990 के दशक तक सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण पद्धति की स्पष्ट रूपरेखा तैयार हुई। इस शब्द का प्रथम आधिकारिक प्रयोग सन 1994 में स्थापित CASEL (Collaborative for Academic,Social, and Emotional Learning) संगठन द्वारा किया गया। इस संगठन की स्थापना पूर्व प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्चतम विद्यालय की शिक्षा में सहयोगात्मक व्यवहार रखते हुए उच्च गुणवत्ता तथा साक्ष्य आधारित`म्स को अनिवार्य भाग के रूप में स्थापित करना है। CASEL संगठन ने सामाजिक व भावनात्मक शिक्षा के प्रमुख निम्न कौशल भी निर्धारित किए हैं –

1. **आत्म जागरूकता** – शिक्षार्थी द्वारा स्वयं की इच्छाओं, भावनाओं, क्षमताओं की सही पहचान करना सीखना। सुख,दुःख, संघर्ष इत्यादि परिस्थितियों में हर्ष, उल्लास, उदासी, निराशा, उत्तेजना जैसी भावनाओं का आकलन करना अपनी समझ के दायरे में विस्तार करता है।
2. **आत्म प्रबंध** – अपनी इच्छाओं तथा भावनाओं पर नियंत्रण।एक बार जब स्वयं की भावनाओं का सही सही विश्लेषण करना सीख लिया जाता है तब अगले चरण के रूप में उन पर नियंत्रण करना आसान हो जाता है। शिक्षार्थी यह जानने लगता है कि अपनी भावनाओं अथवा विचारों को किस तरह प्रकट किया जाए ताकि दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव हो।
3. **सामाजिक जागरूकता** – दूसरों की भावनाओं को समझना व सहानुभूति रखना। समाज विभिन्न वर्गों से मिलकर बनता है जिसमें सभी की अपनी इच्छाएं व विचार होते हैं। एक आदर्श राष्ट्र के लिए अपने साथ दूसरों की भावनाओं का सम्मान करते हुए उनसे सहानुभूति आवश्यक है।
4. **सम्बन्ध कौशल** – दूसरों के साथ सकारात्मक व्यवहार। जब अन्य लोगों की भावनाओं को सम्मान दिया जाता है तब स्वस्थ संबंध बनते हैं। इन्हें बनाना तथा बनाए रखने की क्षमता विकसित करना ही सम्बन्ध कौशल कहलाता है।
5. **जिम्मेदार निर्णय** – स्व–विवेक से निर्णय लेने की क्षमता। व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्तर पर भिन्न परिस्थितियों के अनुसार प्रभावी तथा सर्वहित के निर्णय लेने की क्षमता का विकास सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण का अंतिम चरण है।

सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण की यह पांच दक्षताएं शिक्षार्थी के समग्र विकास की प्राप्ति में सहायक हैं। यह शिक्षण विधि किसी विशेष आयु सीमा के विद्यार्थियों के लिए ही उपयुक्त नहीं है बल्कि किसी भी आयुवर्ग के विद्यार्थी इस विधि से आत्मप्रबंधन सीख सकते हैं। यह कोई ऐसा शिक्षण भी नहीं है जिसके लिए अलग से कालांश की व्यवस्था करनी पड़े बल्कि शैक्षणिक व सह–शैक्षणिक गतिविधियों को करते हुए इसके लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। लिखना, पढ़ना, खेलकूद, ध्यान, योग के साथ कला भी ऐसा क्षेत्र है जो इन दक्षताओं को सीखने में विद्यार्थियों की सहायता करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

कला मानव समाज का एक आनन्ददायी पक्ष है। मानव की विकास यात्रा में कला का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मूलतः कला मन की भावनाओं के संप्रेषण का उचित माध्यम है। मानव मन के उद्‌गार जैसे प्रेम, करुणा, सहानुभूति, रोमांच इत्यादि कलागत कुशलता से व्यक्त किए जाएं तो दूसरों पर इसका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह न केवल मन की संतुष्टि के लिए किया जाने वाला कार्य है बल्कि समाज के हित साधने में भी निरंतर कला का प्रश्रय लिया जाता रहा है। विद्यार्थी कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सही ढंग से अभिव्यक्त करना,दूसरे की भावनाओं को समझना इत्यादि सीखते हैं। कला शिक्षा के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियां विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचार करती हैं साथ ही अपने समुदाय के प्रति सहयोग की भावना प्रबल करती हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षाविदों ने कला शिक्षा को विद्यालयी जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण माना है। इसी कारण कला समेकित शिक्षा को पाठयक्रम का अहम हिस्सा बनाया गया है। यह ऐसी शिक्षण पद्धति है जिसमें गणित,विज्ञान जैसे कठिन विषयों को भी कला से जोड़कर शिक्षण को सरल और प्रभावी बनाया जाता है ताकि अध्ययन की नीरसता को कम किया जाए तथा शिक्षार्थी में आत्मविश्वास बढ़े।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में कला शिक्षा को कक्षा 10 तक अनिवार्य विषय के रूप में स्वीकार किया गया है। इसकी अनुशंसा के आधार पर सत्र 2025–26 से पहली बार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा नए पाठयक्रम में कक्षा 3 से कक्षा 8 तक कला शिक्षा की पुस्तकों का निर्माण किया गया है। कक्षा 3 से 5 तक बांसुरी तथा कक्षा 6 से 8 तक कृति नाम से प्रकाशित इन पुस्तकों में ऐसी रोचक गतिविधियां हैं जो सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोगप्रद है। पाठयक्रम में कला शिक्षा की प्रमुख चार विधाओं क्रमशः दृश्य कला (चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि), संगीत, नृत्य तथा अभिनय कला को रखा गया है ताकि बच्चे कला के विविध क्षेत्रों से सुरुचिपूर्वक संप्रेषण सीख सकें।

आगे कला शिक्षा की उन प्रमुख गतिविधियों पर भी यहां संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है जो सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण के भी अनुरूप हैं –

कक्षा 3 से कला शिक्षा को पाठयक्रम में शामिल किया गया है। पुस्तक बांसुरी–1 में वस्तुओं,पेड़ पौधों,जीव जंतुओं,लोगों,त्यौहार,उत्सव इत्यादि के अवलोकन पर आधारित अध्याय शामिल किए गए हैं। इनमें दिए गए क्रियाकलाप बच्चों को अपने आसपास के वातावरण के प्रति सजग करते हैं। प्रकृति भ्रमण,पशु मुखौटा अभिनय,भिन्न समुदाय के लोक नृत्य,विविध भाषाई गीत इत्यादि विविध गतिविधियां हैं जो किसी शिक्षार्थी को अपने परिवेश से साक्षात्कार करवाती हैं।

कक्षा 4 की पुस्तक बांसुरी में प्रत्यक्षीकरण की एक गतिविधि बताई गई है जिसमें बच्चे किसी दृश्य की कल्पना करते हैं और उसके अनुसार अभिनय करते हैं। अध्याय 7 में दर्पण अभ्यास नाम से एक अन्य गतिविधि है जिसमें बच्चे एक दूसरे के सामने खड़े होकर दर्पण की तरह व्यवहार करते हैं। भूमिका निर्वहन भी एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जिसमें बच्चों को किसी विशेष चरित्र को लेकर अभिनय करना होता है। इस गतिविधि से बच्चों में सक्रिय कल्पना निर्माण,दूसरों की परिस्थिति का अनुभव,समस्या समाधान इत्यादि गुण विकसित होते हैं।

कक्षा 5 की बांसुरी पुस्तक में अध्याय 18 में भावनाएं व्यक्त करने की गतिविधि दर्शाई गई है। बच्चों द्वारा नृत्य के माध्यम से भावनाएं दर्शाना,विपरीत भावों को व्यक्त करना इत्यादि सीखा जाता है। नृत्य के अंतर्गत हस्त मुद्राओं एवं नेत्र द्वारा भाव संचालन की भी गतिविधियां दी गई हैं। तीनों कक्षाओं के सम्मिलित पाठयक्रम में कला के माध्यम से बच्चों को अपने भावों को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

जानना,प्रकट करना,अपने साथियों के साथ सामूहिक प्रदर्शनों में रचनात्मक प्रस्तुति देना इत्यादि क्रियाकलापों पर ध्यान दिया गया है ताकि शिक्षार्थी का संज्ञानात्मक व संवेदनात्मक स्तर पर समग्र विकास हो।

कक्षा 6 से 8 तक कला शिक्षा की पुस्तकों में भारतीय दर्शन के सूत्र रस सिद्धांत को बखूबी शामिल गया गया है जो भाव संवेदना पर आधारित रचना है। कक्षा 6 की पुस्तक कृति 1 के दृश्य कला अनुभाग में प्रकृति भ्रमण व अध्ययन यात्रा की गतिविधियां हैं जो बच्चों में प्रकृति,परिवेश,समाज से जोड़ने का कार्य करती हैं। अध्याय 16 में खेल खेल में नवरस नाम से एक रोचक क्रियाकलाप दिया गया है जिसमें नौ रसों का एक गोल घेरा बनाया जाता है तथा बच्चे उसका चक्कर लगाते हुए रुक जाते हैं फिर जिस रस के आगे रुकते हैं उसके अनुसार चेहरे के भाव दर्शाते हैं।

इसी तरह कक्षा 7 की कृति के अध्याय 1 में भी एक गतिविधि है जिसमें कक्षा कक्ष के कोनों में रसों के नाम लिख दिए जाते हैं तथा बच्चों को यथानिर्देश उन रसों के अनुसार भाव प्रदर्शन करना होता है। अध्याय 2 में मूकाभिनय की गतिविधि है जिसमें बच्चों द्वारा किसी काल्पनिक वस्तु को हाथ में लिए अभिनय किया जाता है तथा साथियों को उस वस्तु को समझना होता है। इसी प्रकार अध्याय 10 में दैनिक दिनचर्या के साथ भावों का मिलान करने संबंधी गतिविधि दर्शाई गई है। मूकाभिनय सार्वभौमिक भाषा की तरह बताया गया है जो एक दूसरे की मनोदशा को समझने का उत्तम उपाय है।

कक्षा 8 की पुस्तक कृति में कला शिक्षा के सैद्धांतिक पक्ष पर जोर दिया गया है। नृत्यरत हस्त मुद्राओं का अभिनय,संगीत के विभिन्न रूप व लोक संस्कृति,कला का षड़ाग सिद्धांत,कला जागरूकता के लिए अभियान जैसे प्रमुख विषयों पर विस्तृत अध्याय हैं। कला के माध्यम से बच्चों को अपने राष्ट्र की विविधता का मिलता है तथा बच्चे समाज के प्रति जागरूक होते हैं।

उपरोक्त समस्त वर्णित गतिविधियां शिक्षार्थी को अपने आंतरिक व्यक्तित्व को जानने,अपना दृष्टिकोण समझने तथा लोगों के व्यवहार को पहचानने में सहायता करती है। शिक्षार्थी परिवेश को जानकर स्वविवेक से निर्णय लेना सीखता है। इन क्रियाकलापों में सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण के तत्व जुड़े हैं। यह सामूहिक अधिगम को बढ़ावा देती हैं। कला शिक्षा में बच्चे अधिक सहयोगी प्रवृति अपनाते हैं। कला शिक्षा की विषय वस्तु रोचक होती है। इसके क्रियान्वयन से बच्चे रचनात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं। कला मुख्य रूप से व्यक्ति में भावनाओं को जन्म देती है तथा उन्हें पोषित करती है। यह संवेदना का विषय है जो परस्पर प्रेम,सहयोग,सहानुभूति को प्रोत्साहित करता है। सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण की मुख्य भावना के अनुरूप कला शिक्षा शिक्षार्थी को संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में ढालती है। कला विषय का आकलन भी परीक्षा आधारित न होकर क्रिया आधारित होता है। अतः यह करके सीखने के अधिगम से प्रभावित है। सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण के सर्वसमावेशी लक्ष्यों की प्राप्ति में कला शिक्षा अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करती है। इससे शिक्षार्थी में जिज्ञासा जन्म लेती है तथा वह सामूहिक चेतना से जुड़ता है। इस तरह कला शिक्षा सामाजिक व भावनात्मक शिक्षण के निहित मुख्य भूमिका का निर्वहन करती है।

संदर्भ सूची –

1. अरोड़ा, जे. – वर्मा, एस. (2025) सामाजिक संवेगात्मक अधिगम : एक परिचर्चा, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS),7(3(ll)),44-50.
2. एनसीईआरटी. (2025), बांसुरी 1 (कक्षा 3). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
3. एनसीईआरटी. (2025), बांसुरी (कक्षा 4,अध्याय 7). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

4. एनसीईआरटी. (2025), बांसुरी (कक्षा 5,अध्याय 18). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
5. एनसीईआरटी. (2025), कृति 1 (कक्षा 6,अध्याय 16). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
6. एनसीईआरटी. (2025), कृति (कक्षा 7,अध्याय 1,2). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
7. एनसीईआरटी. (2025), कृति (कक्षा 8). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.